विषय ; .. इनमें से कौन है मेरा भाई ?...

भाईचारा की कुर्बानी में जीवन का शहीद......।

दीदी......। यह शब्द सुनकर नीला ने अपनी यादों से उठा। बारिश बरसने लगा। बारिश की बूंदें ज़मीन पर गिरकर फिसलने लगा। बारिश की हवा में सूखे पत्ते की गँध उठने लगा। फूलों की आत्मदर्द पर बादल का परोपकार....। बारिश को देखते वक्त नीला ने अपनी माँ की याद किया। अपनी छोटे भाई का याद किया। अपने किए पर पश्चाताप किया। पश्चाप की सागर में डूबते वक्त जीवन को अँत करने का अहसास उसकी आँखों से आँसू की तरह बहना शुरू किया। रेलगाड़ी की शब्द सुनाया। नीला अपने जीवन को अँत करने का निश्चय करके ~~नीला ने~~ रेलवे ट्रेक से चलना शुरू किया। जाते वक्त यादों में डूबा.....।

नीला के छोटे भाई के जन्म होने से नीला का पिता का मृत्यु हुआ। नीला का माँ रमा नीला और उसकी छोटे भाई बालू को खूब प्यार देकर बढ़ाया। लेकिन बालू तो बचपन से रोगी थी। तो रमा और नीला ने बालू को अपना जान समझकर बढ़ाया। दोनों का बचपन मीठा था। नीला नौजवान होते वक्त बालू और रमा ने नीला का शादी तय किया। नीला अपनी पति को अपना जान समझकर प्यार किया। लेकिन उसकी पति तो बुरा और पियक्कड़ था। उसने नीला की संपत्ती पर देखते थी। नीला सबकुछ सहकर चुपचाप जीने लगा। लेकिन एक दिन उसकी पति नीला से कहा कि सारी संपत्ती रमा से लूटो। लेकिन नीला उसका विरोध किया। उसन रमा ने कहा कि सारी धन तो आधी नीला को और आधी बालू को। लेकिन नीला की पति ने नीला को धमकी के कि "बालू को मारो और सारी धन लूटो। ~~अ~~ यह तुमको किया जा सकता है। ~~अ~~ अथ: सारी धन हमारी है। यह असंभव हुए तो बप्लू की मृत्यु मेरी वजह से ~~हुआ~~ होगी और रमा, नीला और नीला की पेट में रहे उसकी बच्चा आदि को मारके करके उसने किसी औरत के साथ किसी देश की

और जाऊँगा। निसहाय नीला ने अपनी पति की क्रूर कथन सुनकर अपनी बच्चा और अपनी स्वार्थ परिवार के सुख केलिए वह किया...

नीला यादों से उठाया। हाँ नीला बालू को मारा। अपना भाई को उसने मारा। अब नीला जैल से अपने किए की नियती से बाहर में है। अपना भाई का मृत्यु, यह देखकर माँ की शाक से हुए मृत्यु, इसकी अपना पति का परिवर्तन, अपनी जान अपनी सारी धन खींचकर एक अन्य औरत से जीते है, इन सारी शाक से अपने पेट में रहते बच्चे का मृत्यु, जैल की अस्वतँत्रता आदि से नीला के मन में आए एक ही रास्ता, अपनी जीवन से आज़ाद होने का एक ही रास्ता - अपनी मृत्यु......। इसी सोच में नीला चलना शुरु किया। जीवन की अँत करने का सुकून उसकी आखों की आसू में दिखाई। इन दिनों में नीला का दिल दर्द से सख्त नज़रबँदी होकर एक जैल की तरह थी। उसकी दिल की रोदन उसकी आँखों में एक चोट बनाकर, उसी से खून बहना शुरु किया। उसकी आसू की नमक उसकी खून की लालिमा में योजित करके उसकी शरीर एक कब्र की तरह दिखाई पड़ी।....

जीवन को अँत करने की आग में जल्दी उसे एक छोटे बच्चे का रोया सुनाया। नीला ने रेलगाड़ी की शब्द में उस रोया सुनने लगा। जब उसने रेलवे ट्रेक की कच्ची-सुनसान आग में जाने वक्त देखा एक छोटा बच्चा। ~~अ~~ देखने ~~घर~~ को भी अनुवाद ~~ब~~ ईश्वर न किया अपने बच्चे के चेहरे याद करने के पहले नीला ने बालू को याद किया जब उस बच्चे को देखने वक्त। नीला उस बच्चे को बुलाया बालू ......। बच्चा रोया रोक किया। नीला की आँखों से अश्रु चुआया उस अश्रु उस बच्चे के आसू से को योजित करके उस रात में चाँद की तरह चमकने लगा। नीला उस बच्चे को लेकर रेलवे स्टेशन से गया। बालू को अपना भाई समझकर उनको किसी तरह से बढ़ाने करने का निश्चय उसने किया। बालू को बढ़ाया किया। लेकिन .... बालू सहरी पदार्थों के उपयोग करके नीला को कुचलना शुरु किया। जब उसने नौजवान हुआ। उसने नीला की सारी संपत्ती लूडकर नीला को वृध्याश्रम की ओर छोड़ा। नीला का जीवन फिर भी खूब की सागर में। दुःखी होते वक्त नीला की दिल में आया अपनी माँ की खूनी कंगन.....। एक दिन बालू ने नीला

को वृध्धाश्रम की ओर से घर की लाया। उस नीला की स्वास्थ्य की सुरक्षा केलिए नीला को अस्पताल की ओर लाया। लेकिन......।

जब नीला ने डाक्टर और बालू की वार्तालाप सुना उसकी दिल टूटा। लेकिन अश्रु तो नहीं आई। उसकी दिल टूटा और उसकी दिल से सख्त गरम खून उसकी आँखों की ओर आया। और आँखों से उस खून लुडना शुरू किया। उसकी दिल की काले रँग के दिल को उस खूनी आसू, उसकी जीवन की कठिनाई को प्रतिफलन था। उसकी दिल की दर्पण में जीवन की हत्या की मोती देख सकती है। फिर भी उसकी आँख में देख सकती है एक **खूनी फूल**....। लेकिन उस फूल में अब नीला अकेला नहीं है। उसकी जीवन का वध करने केलिए उसके साथ पैदे हुए उसकी जीवन का दर्द भी है। उसकी आँसू की वध में उसकी आत्मा की दर्द देख सकती है। आत्मा की दर्द में उसकी जीवन की चमत्कार। बालू डाक्टर से कहती है;

"डाक्टर तुमको दीदी की आँखें, हृदय, किडनी आदि सारी अवयव ले सकते हैं लेकिन मुझे पैसा चाहिए।" डाक्टर ने मना किया "क्या आदमी है तू अपनी दीदी को मारने की

हिम्मत। असमान्य है"। बालू ने जवाब दिया " अरे इस बूढा ने अपने भाई को मारा था उसके बाद उसकी माँ और उसकी पेट में रहते बच्चों को भी मारा। उसकी पाती तो उसकी सामने से बच्चा कर छोड़ा। इस बूढा ने मुझे बुलाती है बालू बालू। क्या इस औरत मुझे भी मारेगा जैसे उसने उसकी भाई को मारा? तो मुझे इस बूढा की मृत्यु चाहिए"। इन शब्दों नीला की दिल को कुचला। चुपचाप नीला ने आस्पताल की कमरा की ओर गया। डक्टर भी आँसू से कमरा की ओर गया। क्योंकि डक्टर की दीदी बीमारी से मर गए थे। तो उसने चुपचाप कमरा में आया और नीला को एक दवा दिया। मृत्यु नीला को खाना शुरु किया। मृत्यु की ओर जाते वक्त नीला ने अपनी जीवन की सारी घटना को याद किया। लेकिन असंभव से यह हुआ की पहली बार से उसकी आँखों से आसू नहीं आई।

कुछ समय के बाद डक्टर ने बाहर आया और बालू से कहा "उसकी किडनी, आखों सब ले सकते है। लेकिन उसकी हृदय वह कहीं वर्षों से इसका विनाश हुआ। डॉक्टर ने रोकर बालू से पूछा "क्या भाई है तू?"

बालू हँसाया। लेकिन उसकी दिल भी न जानकर उसकी आँखों से एक आसू आया। उस आँसू में लिखी हुई थी **क्या मैं उसकी भाई थे ?.......** डॉक्टर ने नीला की हृदय का परिशोधन किया। जब उसने उसकी दिल को छूनने लगा। उसको पता लगा कि क्या है उसकी मृत्यु की समय में उसकी दिल में लिखी गई थी एक बचन - **इनमें से कौन है मेरा भाई ?** उसकी छाती में इन वाक्यों ने लिखी गई थी, उसकी दर्द की तीक्ष्णता की मूर्च्छता में खून की मषी से...... । नीला के लिए उसकी भाई जान थी। लेकिन उस जान को उसने मारा। लेकिन उस भाई के स्थान में आई भाई उसको मारा। हत्याओं की [illegible] भीकरता सिलसिला....। लेकिन उसकी मृत्यु में आए थे एक भाई डॉक्टर के समान। लेकिन वो तो निशहाय थे। भाइयों की प्रेम में नीला डूबी। लेकिन डूबते वक्त उसमें पानी नहीं थी, तीक्ष्णीय गरम खून थी...। अपना ~~साथ~~ यथार्थ भाई को न जानकर नीला गई, इस दुनिया से अकेला...... बिना उसकी दिल...। इन सबको खामोश पड़े देखते सूरज की आँखों से खून बहना शुरु किया।